संस्कृत

संस्कृत विभाग

रस-सिद्धान्त

Atul Kumar Mishra, Assistant Professor
Govt. Degree College, Amori

संस्कृत

रसस्वरूप

कारणान्यथ कार्याणि सहकारीणि यानि च ।
रत्यादेः स्थायिनो लोके तानि चेन्नाट्यकाव्ययोः ॥
विभावा अनुभावास्तत् कथ्यन्ते व्यभिचारिणः ।
व्यक्तः स तैर्विभावाद्यैः स्थायी भावो रसः स्मृतः ॥

संस्कृत

भरतसूत्र

❖विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः

➢ स्थायी भाव-

- ये प्रत्येक मानव के ह्रदय मे सुषुप्तावस्था में रहने वाली चित्तवृत्ति विशेष है, जो अनुकूल अवसर पर स्वतः जागृत हो जाती हैं।

➢ विभाव-

- रस भाव की उद्बोधक स्थिति। ये आलम्बन और उद्दीपन के भेद से दो प्रकार के हैं।
- आलम्बन- सहारा जिस पर रस आश्रित रहता है।
- उद्दीपन- जो रस को उत्तेजित करें।

संस्कृत

अनुभाव

- ‘अनु पश्चाद् भवन्ति इत्यनुभावाः‘
- मन में रत्यादि भावों के उद्दीप्त होने के पश्चाद् भुजाक्षेप, भ्रूविक्षेप आदि व्यापार रतिभाव को सूचित करता है।
- सामाजिक की चित्तवृत्ति को तन्मय करना, उसको भाव में लीन कर देना।

❖ **व्यभिचारिभाव-**

- ये स्थायी भावों के पोषण और अभिव्यञ्जन में सहायक होती हैं।
- किसी भी रस के साथ इनका नियत सम्बन्ध नहीं होता है, स्थायी भाव में वैचित्र्य उत्पन्न कर चली जाती है।

संस्कृत

रसविवरण

श्रृङ्गार	रति	श्याम	विष्णु
हास्य	हास	शुक्ल	प्रमथ
करुण	शोक	कपोत	यमराज
रौद्र	क्रोध	लाल	रुद्र
वीर	उत्साह	सुवर्ण	महेन्द्र/इन्द्र
भयानक	भय	कृष्ण	काल
बीभत्स	जुगुप्सा	नीला	महाकाल
अद्भुत	विस्मय	पीला	गन्धर्व

संस्कृत

रससूत्र के व्याख्याकार

- भरत के रससूत्र पर चार व्याख्याकार प्रसिद्ध है।
- भट्टलोल्लट, शङ्कुक, भट्टनायक, अभिनवगुप्त।

❖ **भट्टलोल्लट-**

- निष्पत्ति – उत्पत्तिवाद।
- इनके मत में विभावादि के संयोग से अनुकार्य आदि में रस की उत्पत्ति होती है।
- सामाजिक में रस की उत्पत्ति नही होती हैं।
- इस व्याख्या को आचार्यों ने मीमांसा-सिद्धांत के अनुसार माना है।

संस्कृत

शङ्कुक

- निष्पत्ति- अनुमितिवाद, न्याय।
- इन्होंने सामाजिक के साथ रस का सम्बन्ध दिखलाने का प्रयत्न किये है।
- नट में जो राम बुद्धि होती है वह सम्यक्, मिथ्या, संशय, सादृश्य इन चारों प्रकार की प्रतीतियों से विलक्षण चित्रतुरगन्याय से व्यवहार होता है।
- कृत्रिम राम और सीता में रहने वाली रस का सामाजिक को केवल अनुमान होता है।

संस्कृत

भट्टनायक

- निष्पत्ति – भुक्तिवाद, सांख्यवादी।
- तीनों मतों का खण्डन।
- अभिधा, लक्षणा से अतिरिक्त भावकत्व तथा भोजकत्व दो नये व्यापारों की कल्पना की है।
- शब्द का भावकत्व व्यापार कथा में परिष्कार कर व्यक्तिविशेष से सम्बन्ध हटाकर साधारणीकरण।
- भावकत्व से काव्यार्थ का साधारणीकरण हो जाता है तब भोजकत्व से सामाजिक को रस का साक्षात्कारात्मक भोग होता है।

संस्कृत

अभिनवगुप्त

- निष्पत्ति –अभिव्यक्ति, आलङ्कारिक मत।
- इन्होंने स्पष्ट कर दिया है कि सामाजिकगत स्थायिभाव ही रसानुभूति का निमित्त होता है।
- वह साधारणीकृतरूप से उपस्थित विभावादि-सामग्री से उद्बुद्ध हो जाता है।
- ये शब्दों की तीनों शक्ति स्वीकार करते है।
- अभिनवगुप्त ने रस को अलौकिक कहाँ है।
- लौकिक अनित्य वस्तुएँ दो प्रकार की होती है-कार्य, ज्ञाप्य।
- पुर्वसिद्ध पदार्थ का जब किसी साधन(दीपक) के द्वारा ज्ञान होता है वह पदार्थ ज्ञाप्य कहलाता है।
- रस की सत्ता न अनुभव से पुर्वकाल में रहती है न अनुभव के बाद इसीलिए यह ज्ञाप्य भी नहीं है।

SANSKRIT